**अखबार वाला**

"न्यूज़ पेपर, न्यूज़ पेपर" हमेशा की तरह रट लगाते हुए 'श्लोक' ने श्याम बाबू के घर पर दस्तक दी। श्लोक अखबार दरवाज़े पर रखकर जा ही रहा था कक अचानक से घर का प्रवेश द्वार खुला। आज अखबार उठाने कोई सुन्दर युवती आई थी। सााँवली और

आकर्षक काया, सुन्दर नयन-नक्श, घुाँघराले बाल और गुलाबी होठ की स्वाकमनी वह

'कप्रया' थी। श्लोक पल भर के कलए वहीाँ ठहर सा गया। कप्रया को श्लोक के उसकी ओर दे खने का एहसास हुआ अतः वह क्रोकधत होकर बड़बड़ाती हुई दरवाज़ा बोंद करके अोंदर को चली गई। श्लोक अभी भी सम्मोकहत सा द्वार की ओर ही दे खे जा रहा था कक एकाएक उसे याद आया कक आज से कॉलेज खुल रहा है और उसकी क्लास है। श्लोक ने एक माह पहले ही शहर के नामचीन कॉलेज में कवकध में स्नातक पाठ्यक्रम (एल एल बी) में दाकऻला कलया था और यह दाखखला भी उसे दे शस्तर की प्रवेश परीक्षा में पहली रैं क प्राप्त करने के कारण कमला था। यहााँ तक कक इस उपलब्धता के चलते कॉलेज ने उसका शुल्क भी माफ़ कर कदया था। श्लोक अच्छी कद काठी वाला हृष्ट-पुष्ट व्यखि था। उसकी कों जी आाँखें थी और उसके नीचे काले घेरे थे। ये काले घेरे भी इसकलए पड़ गए थे क्ोकों क श्लोक सुबह जल्दी उठकर अखबार बााँटता था और कदन भर अन्य घरे लू कामो को करके दे र रात तक पढ़ता था। उसकी एक छोटी बहन भी थी, कजसका नाम प्रकतज्ञा था।

श्लोक जल्दी से अखबार बााँट कर घर पहुाँचकर जल्दी से तैयार होकर कॉलेज के कलए कनकल जाता है। श्लोक वक़्त का पाबन्द था, उसे कही ों भी जाना होता तो वो समय से पााँच दस कमनट पहले ही पहुाँचता था। श्लोक कॉलेज पहुाँच कर कक्षा की ओर जा ही रहा था कक अचानक उसकी कनगाह कप्रया की ओर पड़ी जो अपनी दोस्त प्रीकत के साथ कॉलेज के पाकष में बैठी हुई बात करने में खोई हुई थी। श्लोक पुनः सम्मोकहत सा उसे दे खने लगा कक बात करते करते कप्रया की नज़र श्लोक की ओर पड़ी। कप्रया गुस्से में बड़बड़ाने लगती है।

प्रीकत (कप्रया से): "क्ा हुआ कप्रया, क्ा बड़बड़ा रही हो? बात क्ा है?" कप्रया: "तुम उस लड़के को दे ख रही हो?"

प्रीकत: "कौन, वो सामने? श्लोक?"

कप्रया: "हााँ, कोई सा भी लोक हो। ये सुबह से मुझे देखे जा रहा है। जी तो करता है इसकी आाँखें नोच लूाँ। बेवऺू फ़ अखबार वाला।"

प्रीकत (कप्रया से): "क्ा तुम वही लड़के की बोल रही हो जो ठीक सामने खड़ा है?" कप्रया: "हााँ बहन उसी लड़के की बोल रही हाँ।"

प्रीकत: "तुम्हे पता है ये कौन है?"

कप्रया: "हााँ दो टके का अऻबार वाला।" प्रीकत: "ये और अखबार वाला, ये तो. "

(अचानक क्लास के कलए ज़ोर से घण्टी बजती है)

कप्रया: "छोड़ ये, जल्दी से क्लास चल मैं पहले कदन दे री से नही ों पहुाँचना चाहती।" और इसी के साथ सारे कवद्याथी क्लास में पहुाँच जाते हैं।

लेक्चर पूरा होने के बाद श्लोक कप्रया से दोस्ती के कलए पूछने का कनणषय करता है।

50 कमनट के लेक्चर के बाद पुनः ज़ोर की घण्टी बजती है और कप्रया प्रीकत के साथ क्लास से बाहर चल दे ती है। बात करने के कवचार से श्लोक उनके पीछे चल दे ता है। थोड़ा आगे जाने पर कप्रया को एहसास होता है कक कोई उसका पीछा कर रहा है। कप्रया जैसे ही मुड़ कर दे खती है कक क्रोध के आवेश में आपे से बाहर होकर श्लोक की तरफ आकर उसके गाल पर एक ज़ोर का थप्पड़ मार दे ती है।

कप्रया (श्लोक से): "तुम अपने आप को समझते क्ा हो? सुबह से तुम मुझे घूर रहे हो अब पीछा कर रहे हो। अगर मैं चाहाँ तो तुम्हें दो कमनट में अन्दर करवा सकती हाँ। मेरे कपताजी इस कॉलेज के टर स्टी और सत्ताधारी पाटी के एक कद्दावर नेता हैं। आज के बाद तुमने कभी भी कही ों भी मेरा पीछा करने की या मुझे घूरने की कोकशश की तो तुम कज़न्दगी भर नही ों भूलोगे कक तुम्हारा पाला ककस्से पड़ा था।"

प्रीकत: "कप्रया बस करो, चलो यहााँ से।"

कप्रया: "कवकध पड़ने आया है बेअकल को इतना भी नही ों पता कक ये सब अवैधाकनक है।"

श्लोक ने ऐसा सपने में भी कभी न सोचा था कक दोस्ती का कसला दुश्मनी होगी और फू ल चुनने में कााँटा पहले चुभेगा। लेककन उसे ये बेशक पता था कक पत्थर फलदार पेड़ को ही पड़ते हैं। और कफर नारीप्रधान कवकध के दण्ड से बचने के कलए कदल ककसको और कै से कदखाएगा? कौन दे खेगा उसकी भावनाओों को, और कै से? ऐसा सोचकर श्लोक वहाों से अगले लेक्चर के कलए अपने क्लासरूम की ओर चला जाता है।

उस कदन के बाद से श्लोक ने कप्रया की ओर दे खना तक बोंद कर कदया और तो और अखबार डालने का काम भी बोंद कर कदया।

अगले कदन सुबह आवाज़ आई, "आज की खबर, आज की खबर"। कप्रया ने दरवाजे पर जाकर जब दे खा तो वो बहुत खुश हुई। ये अखबार डालने वाला श्लोक नही ों था। मन ही मन अपनी दबोंगई पर खुश होने लगी कक अच्छा सबक कसखाया उस गाँवार अखबार वाले भीखमोंगे को। कक एकाएक उसकी कनगाह मुख्य पृष्ठ के कोने में छपे एक इोंटरव्यू पर गई। अरे ये तो उसकी फोटो है। अरे ये तो वो अखबार वाला है। इस अनपढ़ गरीब की खबर, आखखर छपा क्ा है ऐसा सोच कर उस इोंटरव्यू को पढ़ने लगी।

पहला प्रश्न था, "आपको कै सा लग रहा है? आपने अखखल भारतीय कवकध प्रवेश परीक्षा में प्रथम रैं क हाकसल की है।"

श्लोक: "जी, मुझे बेहद ऻुशी है।"

कप्रया हतप्रभ होकर अपनी आाँखोों पर भरोसा नही ों कर पा रही है, "ये और इतना होकशयार!", आगे दे खती हाँ क्ा छपा है।

ररपोटषर: "आपको स्वयों प्रधानमोंत्री जी ने व्यखिगत शुभकामनायें दी, उस पर आप कु छ कहना चाहेंगे?"

श्लोक: "जी। मेरे कलए ये सौभाग्य की बात है कक स्वयों प्रधानमोंत्री जी ने मुझे इस काकबल समझा जो अपनी शुभकामनाये व्यखिगत तौर पर मुझे भेजी। मैं उनका शुकक्रया अदा करता हाँ।"

कप्रया (स्वयों से): "प्रधानमोंत्रीजी से शुभकामनाएों ! मुझे भरोसा नही ों होता!"

ररपोटषर: "आपने वो ही कॉलेज को क्ोों चुना जबकक आप दे श के नोंबर एक लॉ कॉलेज में भी दाखखला ले सकते थे?"

कप्रया (स्वयों से): "मेरा मन कु ढ़ाने के कलए और क्ोों कलया होगा"

श्लोक: "इस कॉलेज का चयन मैंने तब ककया था जब यहााँ के टर स्टी श्री अलोक मेहता जी ने मुझे व्यखिगत तौर पर दाखखला लेने का अनुरोध ककया। साथ ही मेरी पूरी फीस माफ़ करवाने और ककताबोों का पूरा खचष वहन करने का आश्वासन भेजा। यकीनन कोई कॉलेज बुरा नही ों होता और कफर ये तो मेरे अपने शहर का नामी कॉलेज है।"

कप्रया (स्वयों से): "आलोक मेहता!", "मतलब पापा ने इसको..." ररपोटषर: "आपके घर में कौन कौन है?"

श्लोक: "मैं और मेरी छोटी बहन प्रकतज्ञा।" ररपोटषर: "और माता कपता?"

श्लोक: "जी वो इस दुकनया में नही ों रहे। आज से तीन वर्ष पहले एक कार दुघषटना में उनकी मृत्यु हो गई।"

कप्रया (पुनः स्वयों से): "मतलब कार भी थी इसके यहााँ!" ररपोटषर: "आप भकवष्य में क्ा बनना चाहते हैं?"

श्लोक: "अपने कपता की तरह एक अच्छा न्यायाधीश।" ररपोटषर: "वो कहााँ न्यायाधीश थे?"

श्लोक: "हमारे ही राज्य के उच्च न्यायलय में।"

कप्रया (स्वयों से): "इतने बड़े जज का बेटा और अखबार....!! मुझे तो अपनी आखोों पर भरोसा ही नही ों हो रहा।"

ररपोटषर: "और कु छ बताना चाहेंगे आप अपने बारे में?"

श्लोक: "जी। मैंने अपने कपताजी माताजी के समय में कभी कोई अभाव नही ों झेला। समृद्ध पररवार था हमारा। उस कार दुघषटना में कपताजी की तत्काल मृत्यु हो गई थी जबकक मााँ काफी कदनोों तक अस्पताल में कज़न्दगी और मौत से लड़ती रही। मााँ पुनः ठीक होगी इस आशा में जैसा कचककत्सकोों ने कहा हमने ककया। कजतना जहााँ खचष बताया उतना कदया, ककन्तु अोंत में मााँ ने भी हमारा साथ छोड़ कदया। कफर मैंने अचानक से आए अभाव झेले। कज़न्दगी का ममष जाना और गुज़र बसर के कलए कई जगह नौकरी की। पर जाना कक लोगोों की नीयत बड़ी गन्दी है। पूरा काम करवा कर पैसा मार लेते हैं। तब ये सोचकर कक कोई काम छोटा या बड़ा नही ों होता मैंने अखबार डालने का कनणषय ककया। लेककन अखबार डालते वक़्त मैंने शायद ककसी के ह्रदय को ठें स पहुोंचा दी इसकलए कल से मैं अखबार न डालकर अपना वक़्त पढ़ाई को दूों गा।"

ररपोटषर: "आपके भकवष्य की मोंगलकामना करते हैं।" श्लोक: "धन्यवाद।"

कप्रया को उस खबर को पढ़ने के बाद यह एहसास हुआ कक शायद उससे श्लोक को समझने में कु छ भूल हुई है। श्लोक अच्छे घर पररवार का लड़का था और उसने उसका

स्तर अखबार डालने से अनुमान लगाया। कप्रया ने सोचा वह अपने ककये का पश्चाताप करे गी और श्लोक से क्षमा माोंगेगी।

कप्रया समय से कॉलेज के कलए रवाना हुई। कॉलेज पहुाँचा तो दे खा भीड़ लग रही है। उसी भीड़ से प्रीकत बाहर आती कदखी। कप्रया ने प्रीकत को आवाज़ दे कर बुलाया और पूछा कक आखखर ये भीड़ जमा क्ोों है?

प्रीकत (कप्रया से): "तुझे पता है कल कजस लड़के को तूने थप्पड़ मारा था वो All india first ranker है। उसका एक और इोंटरव्यू आज प्रकाकशत हुआ है।"

कप्रया: "एक और? पहला कब हुआ था?"

प्रीकत: "कल ही तो हुआ था प्रसारण। बड़े बड़े न्यूज़ चैनल पर।"

कप्रया: "तो कल तू मुझे बता नही ों सकती थी, मैंने न जाने उसको क्ा समझ कर उसके गाल पर एक थप्पड़ जमा कदया।"

प्रीकत: "मैंने तुझे कल भी बताने की कोकशश की थी पर क्रोध के आवेश में तू असामान्य होकर न जाने कै सा व्यवहार करने लगी थी। सुनने की खस्तकथ में तो जैसे थी ही नही।ों न्यायाधीश के बेटे और इतने मेधावी छात्र को पता नही ों तूने कौन कौन से कानून समझा कदए।"

कप्रया: "अब तू मुझे सुनाती ही रहेगी या उससे बात भी करवाएगी मेरी?"

प्रीकत: "मैं क्ोों करवाऊों गी भला? क्ा मुझसे पूछ कर तूने उसे थप्पड़ मारा था?"

कप्रया: "चल तो कम से कम मेरे साथ। कै सी दोस्त है, न जाने ककतना सुना रही है। भीड़ कम होते ही दोनोों उससे बात करने चलेंगे।"

और इसी के साथ दोनोों भीड़ के कम होने का इोंतज़ार करने लगते हैं। लगभग आधे घण्टे के बाद जब भीड़ छाँ टी तो कप्रया और प्रीकत श्लोक के पास पहुाँचे।

कप्रया (श्लोक से): आज तुम अखबार डालने नही ों आये? श्लोक: "तुम्हें पसोंद नही ों था इसकलए।"

कप्रया: "कल के अपने व्यवहार के कलए मैं शकमिंदा हाँ लेककन कल तुम हमारा पीछा क्ोों कर रहे थे?"

श्लोक: "तुमसे दोस्ती का पूछने के कलए।"

कप्रया: "तुम पापा से कमल चुके हो, कल ये तुमने क्ोों नही ों बताया?" श्लोक: "तुमने कु छ कहने लायक छोड़ा कब था।"

कप्रया: "अच्छा, कल के कलए माफ़ी। और अगर तुम चाहो तो हम दोस्त बन सकते हैं।" श्लोक: "सोच लो।"

कप्रया: "सोच कलया।"

और इसी के बाद दोनोों अक्सर कमलने लगे। कै न्टीन में साथ कॉफी पीने से लेकर, क्लास में एक साथ बैठने तक। बाहर एक साथ घूमने जाने से लेकर, एक साथ पढाई करने तक। सब कु छ। और तो और अब तो कप्रया श्लोक के घर भी पढाई के बहाने से जाने लगी। शायद कप्रया को श्लोक कु छ ज़्यादा ही पसोंद आ गया था। एक रोज़ कप्रया ने श्लोक को अपने कदल का हाल सुना कदया कक वह श्लोक को दोस्त से बढ़कर मानने लगी है। श्लोक ने उससे पूछा कक क्ा उसके कपता आलोक अोंकल मानेंगे? क्ा कप्रया के चाचा श्याम बाबू मानेंगे?

कप्रया ने कहा "पता नही ों लेककन दस कदन बाद तीन कदनोों के कलए मैं अपने कपता के पास जा रही हाँ। वहााँ उनसे पूछकर, उनको मनाकर कफर तुम्हें उनका कनणषय मैसेज से भेजूोंगी। अगर उनका कनणषय हााँ हुआ तो क्ा तुम मेरे घर आओगे?"

श्लोक: "मैं चाहें आऊों या ना आऊों लेककन तुम जब भी महसूस करोगी मुझे अपने पास पाओगी। और हााँ उनको बता दे ना कक मैं एक अऻबार वाला हाँ।"

कप्रया (तुनक कर): "तुम मुझ पर तोंज कस रहे हो न"

श्लोक: "नही, भला।"

कबल्कु ल नही।

मेरे कहने का आशय है कक अपनी औकात से क्ोों भागना

कप्रया: "हााँ मैं दे ख लूाँगी कक मुझे क्ा ककतना बोलना है, तुम चुप रहो।"

और इसी के साथ दस कदन का समय ऐसे ही कमलते जुलते, बातचीतोों में व्यतीत हो जाता है और वक़्त आ ही जाता है जब कप्रया अपने घर जाने के कलए कनकल रही होती है।

कप्रया (श्लोक से): "अपना ध्यान रखना और प्रकतज्ञा का भी।" श्लोक (दुःखी मन से): "हमारा ध्यान तो तुम्हे ही रखना है।"

कप्रया: "हााँ मैं ही रखूोंगी। पर अभी मुझे चलना होगा। अगर उनका हााँ हुआ तो तुम मुझसे वहाों कमलने आओगे।"

श्लोक: "मैंने तुम्हें बोला तो मैं तो हमेशा ही तुम्हारे साथ हाँ। जब मन करे महसूस कर लेना।"

और इसी के साथ कप्रया अपने घर के कलए टरेन से कनकल जाती है। घर पहुाँचकर कप्रया आलोक बाबू को सब बता देती है। आलोक बाबू बताते हैं कक जब वह उसी शहर में रहते थे जहााँ उसके भाई श्याम बाबू रहते हैं, तब श्लोक के कपताजी ने आलोक बाबू के कई राजनीकतक प्रकरणोों में उनकी सहायता की थी और कफर श्लोक सुन्दर है, मेधावी है तो भला हम कै से मना कर सकते हैं। कप्रया ये सब सुनकर मन ही मन अकतप्रसन्न हो रही थी। कप्रया ने तत्काल अपने कक्ष में पहुोंचकर श्लोक को मैसेज ककया कक उसका पररवार इस ररश्ते को राजी है और श्लोक को अब उससे कमलने आना चाकहए। श्लोक ने बहुत समझाया कक दो और कदन की बात है कफर तो कप्रया वापस लौट आएगी लेककन कप्रया एक सुनने की मनोदशा में नही ों थी। स्त्रीहठ के सामने तो भला दे वता भी हार जाए कफर श्लोक क्ा बेचता था। अतः श्लोक ने आने का आश्वासन दे कदया। श्लोक के आगमन की सूचना कप्रया ने अपने घरवालोों को भी दे दी और श्लोक के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी। अगले ही कदन दोपहर दो बजे तक श्लोक को कप्रया के घर पहुाँच जाना था। कप्रया दोपहर 12 बजे से श्लोक की यादोों में खो गई कक अचानक उसके कक्ष के द्वार पर खटका लगा। कप्रया ने उठकर दे खा तो ये और कोई नही ों श्लोक था।

कप्रया: "श्लोक तुम! तय समय से पूरा एक घोंटा पहले आए। क्ा बात है। समय की पाबन्दगी हो तो ऐसी हो।"

श्लोक: "कप्रया, तुमने बुलाया तो मुझे तो आना ही था। आखखर अपना वायदा जो पूरा करना था।"

कप्रया: "अब हम कभी अलग नही ों होग प्रकतपल जलाता है।"

े। ये कवरह का ताप मेरे अन्तमषन की दे ह को

श्लोक: "कमलन और कवरह तो कनयकत कनकश्चत करती है। बस तुम एक वायदा करो।" कप्रया: "कै सा वायदा? बोलो।"

श्लोक: "प्रकतज्ञा का ध्यान रखोगी।" कप्रया: "ये भी कोई कहने की बात है।"

इसी बीच कप्रया की मााँ सुनैना कप्रया कप्रया ज़ोर से कचल्लाती हैं। कप्रया अपने कक्ष से बाहर भागती है।

सुनैना: "श्लोक ककस टरैन से आने वाला था?" कप्रया: "आगरा भोपाल सुपरफास्ट"

सुनैना: "अभी खबर लगी है कक ये टरैन बेपटरी हो गई है और सभी यात्री मारे गए हैं एक के भी बचने की खबर नही ों है।"

कप्रया: "लेककन मााँ श्लोक आ चुका है मेरे ही कमरे में है।"

कप्रया श्लोक श्लोक करके अपने कमरे की ओर वापस भागती है। पर अब वहाों कोई नही ों है। कमरे का सन्नाटा साोंय साोंय करके अलग ही पीड़ा दे रहा है कक अचानक कप्रया को श्लोक की बात याद आती है "मैं चाहें आऊों या ना आऊों लेककन तुम जब भी महसूस करोगी मुझे अपने पास पाओगी।" शायद कप्रया श्लोक की याद में इतना डू ब गई कक उसे एहसास नही ों हुआ कक कब पल भर के कलए श्लोक उससे कमलकर चला भी गया। कप्रया वहीाँ बेड पर बैठी फाँू ट फूाँ ट कर रोने लगी। उसे एक एक करके वो सब स्मरण होने लगा कक कै से एक अखबार वाला उसकी कज़न्दगी में आया और अखबार की खबर बनकर हमेशा के कलए चला गया। उसे खुद पर गुस्सा आने लगी कक आखखर उसने क्ोों श्लोक से आने की कज़द की जबकक वो नही ों आना चाह रहा रहा और यही सोच सोच कर पागलो की तरह चीखने कचल्लाने लगी। शायद उसके व्यकथत और शोक सोंतृप्त मन का वणषन शब्ोों के माध्यम से सोंभव न होगा। शायद ईश्वर को भी उस अखबार वाले से इतना प्रेम

हो गया था कक कप्रया कमलन से पहले उन्ोने अपने कमलन की कनयकत रच दी। लेककन

श्लोक कप्रया के कलए आज भी नही ों मरा। एकाोंत में बैठ जब भी कप्रया उसे सोचती है अश्रुपूररत नयनोों से भी उसे साफ़ साफ़ दे ख पाती है। शायद उनका प्रेम सब बोंधनोों से मुि, पारलौककक था।

# लेखक मयंक सक्सैना 'हनी'

**पुरानी ववजय नगर कॉलोनी, आगरा, उत्तर प्रदेश – 282004**

# (वदनांक 30/अगस्त/2021 को वलखी गई एक कहानी)